शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विनोबा विचार प्रवाह अंतर्राष्ट्रीय संगीति : एक अभिनव प्रयोग

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

भूदान आन्दोलन के प्रणेता संत विनोबा जी की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में विनोबा विचार प्रवाह द्वारा 1 अगस्त से 11 सितम्बर 2020 तक फेसबुक पर अंतर्राष्ट्रीय संगीति का आयोजन किया गया। विनोबा जी द्वारा 25 मार्च 1959 में महाराष्ट्र के वर्धा के निकट पवनार गाँव में स्थापित ब्रह्मविद्या मंदिर का इसे आशीर्वाद प्राप्त हुआ। ब्रह्मविद्या मंदिर पवनार के गोमुख से निकली इस ज्ञानगंगा में देश-विदेश के विद्वतजनों की वैचारिक नदियों के प्रवाह आकर मिले। इस ज्ञानगंगा के तट पर बैठकर सुधी श्रोताओं ने पवित्र विचारों के प्रवाह में स्नान कर चित्त शुद्धि का लाभ अर्जित किया। इस ज्ञान गंगा में देश के उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ विचारकों ने अपने ज्ञान के दीपक इसमें प्रवाहित किये। इस प्रवाह ने देश-विदेश के अनेक विचारवान और सहृदय व्यक्तियों की बुद्धि और हृदय को प्रकाशित करने का महत्वपूर्व कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सनातन और अखंड परंपरा में संत विनोबा का आगमन ईश्वर की पूर्व नियोजित योजना का भाग है। 11 सितंबर 1895 को श्री नरहरि-रुक्मिणी भावे ने जिस बालक विन्या को जन्म दिया, वह अनेक जन्मों की साधना कर चुका था। माता-पिता के सत्कर्म और विनोबा की पूर्व साधना ने भावे परिवार का चयन किया। केवल उन्होंने ही नहीं बल्कि उनके दो भाई श्री बालकोबा और शिवजी भावे ने भी उस परिवार में जन्म लिया। उनके जन्म और जीवन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि पहले के जीवन में तीनों में गहरी मित्रता रही होगी। तीनों बाल ब्रह्मचारी और एक-दूसरे के लिए कैसा समर्पण भाव। विनोबा जी के जन्म जयंती वर्ष के निमित्त से आयोजित इस विचार प्रवाह में संत विनोबा के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक पहलुओं को उजागर किया गया।

विनोबा जी का जीवन और कार्य हिमखंड जैसा रहा है। हिमखंड जितना ऊपर दिखाई देता है उससे कई गुना अधिक समुद्र में छिपा रहता है। इसे चालीस दिनों में समेट पाना कठिन था। ब्रह्मविद्या मंदिर की ज्येष्ठ अन्तेवासी सुश्री उषा बहन के प्रास्ताविक से यह प्रवाह प्रारंभ हुआ और विनोबा जयंती पर सुश्री कालिंदी बहन के उद्बोधन से इसका समापन हुआ। इस पूरे प्रवाह को तीन खण्डों में विभाजित किया गया जिन्हें सत्य, प्रेम और करुणा नाम दिया गया। विनोबा 125 में विचार प्रवाह में 125 वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। इनमें से ब्रह्मविद्या मंदिर की शीला बहन, गंगामाँ, चेनमा बहन, ज्योति बहन, रेखा बहन, कंचन बहन, मीनू बहन और गौतम भाई ने ब्रह्म विद्या मंदिर की स्थापना, उसका उद्देश्य और लक्ष्य, विनोबा और भगवतगीता का सम्बन्ध, विज्ञान और अध्यात्म, जीवन में गुण दर्शन, बागी समर्पण, वेद चिंतन, मन से ऊपर कैसे उठें, ध्यान की प्रक्रिया, स्वराज्य शास्त्र, स्थितप्रगी दर्शन जैस गंभीर विषयों को अत्यंत सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। इस विचार प्रवाह में वरिष्ठ

सर्वोदय सेवक सर्वश्री एस.एन.सुब्बाराव, लक्ष्मी दास, राजेंद्र सिंह, शंकर सान्याल, सत्यरंजन धर्माधिकारी, डॉ.सुजाता चौधरी, राकेश पालीवाल, पी.वी.राजगोपाल, सोहम पंड्या, अनार बहन, राजेंद्र खेमाणी, डॉ.उल्हास जाजू, देवेन्द्र देसाई, मोहन भाई हीराबाई हीरालाल, विमल बहन, उर्मिला बहन, मधुसूदन अग्रवाल, अमी भट्ट, रीवा जोशी (कनाडा), भारत महोदय, अमरनाथ भाई, धीरूभाई, धर्मपाल सैनी, निपुण भाई (अमेरिका), सुदर्शन आयंगर, राहा नाभा कुमार (बांग्लादेश), डॉ,विजय भटकर, पराग चोलकर, डॉ.गीता मेहता, चंपा बहन (असम), चन्द्रकिशोर भाई (नेपाल) ने विनोबा जी के विभिन्न पहलूओं को प्रकाश डाला। संत विनोबा जी के जीवन को देखकर यह कल्पना की जा सकती है कि वैदिक ऋषि कैसे होंगे, जिन्होंने जीवन को पूरी समग्रता से देखा और भारतीय संस्कृति और सभ्यता को पुष्ट करने में अनासक्त भाव से अप्रतिम योगदान दिया। विनोबा के जीवन में कर्मयोग और संन्यास का अद्भुत संगम दिखायी देता है। आमतौर पर कर्मयोगी को कर्म की आसक्ति होती है और संन्यासी संसार छोड़कर बैठ जाता है। विनोबा जी का जीवन जल-कमलवत् रहा। भूदान जैसा महापराक्रम करने वाला व्यक्ति इतना अलिप्त रह सकता है, यह सोचकर आश्चर्य होता है। क्रौंच पक्षी के वध के बाद क्रौंची के करुण क्रंदन ने वाल्मीकि का हृदय विदीर्ण कर दिया और उनके करुणार्द्र हृदय से करुणा की गंगा प्रवाहित हुई। उसी प्रकार विनोबा का हृदय लोकपीड़ा से द्रवित हुआ, फलत: आंध्रप्रदेश के पोचमपल्ली से 18 अप्रैल 1951 को भूदान गंगा का उद्गम हुआ। भूमि समस्या को हल करने के लिए विनोबा जी ने तेरह साल तक अखंड रूप से पूरे देश की पदयात्रा की। उन्होंने अपने कृतित्व से समाज में क्रांति को लेकर व्याप्त भ्रांत धारणाओं को दूर किया। भारत के आजादी आंदोलन में जिस सत्याग्रह और अहिंसा का महात्मा गांधी ने बीज वपन किया था, विनोबा जी ने आजादी के बाद सत्याग्रह और अहिंसा को नया अर्थ प्रदान किया। नकारात्मक भाव को सकारात्मक बनाकर समाज में प्रतिष्ठित करने का श्रेय विनोबा जी को है। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्वधर्म संसद को संबोधित करते हुए कहा था कि आज सभी धर्मों के सारभाग को ग्रहण करने की आवश्यकता है, क्योंकि भविष्य में सभी धर्मों की पताका पर लिखा रहेगा परभाव ग्रहण न कि परभाव विनाश। विनोबा जी ने भागवतधर्म सार, धम्मपद, सम्मणंसुत्तं, कुरान सार, ख्रिस्तधर्म सार, जपजी देकर सभी धर्मों में समन्वय स्थापित किया है। कोरोना संकट ने हमें एक बार फिर हमारे सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों की ओर देखने का अवसर प्रदान किया है। विनोबा जी ने ग्रामाधारित अर्थरचना के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलूओं को हम सभी के सामने रख दिया है, जिनका उल्लेख विनोबा विचार प्रवाह में बार-बार किया गया। इस महामारी ने व्यक्ति को विज्ञान की तरफ नयी दृष्टि से देखने पर विवश किया है। अध्यात्म की प्रथम सीढ़ी योग, आसन, प्राणायाम मनुष्य की दिनचर्या में शामिल हुए हैं। आज नयी समाज रचना का सूत्रपात हो रहा है। सभी प्रकार के संबंधों को फिर से परिभाषित किया जा रहा है। संत विनोबा औपनिषदिक परंपरा के आधुनिक ऋषि हैं। वे रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविन्द, महात्मा गांधी की त्रयी के प्रस्थान बिंदु हैं। फेसबुक लिंक है :

www.facebook.com/vinoba125y